* श्री *

॥ होडाचक्र ॥

भाषा टीका सहितम्

जिसको

सरदार जोतसिंह संतसिंह

पब्लिशर्स व ताजरान कुतुब

लुहारी दरवाज़ा लाहौरने

गफूरबख्श एण्ड सन्स

[illegible] ताजरान कुतुब आगरा के

[illegible] प्रेस आगरा में छपवाकर

[illegible]ाशित किया

[illegible]?

श्री

अथ होडाचक्रम्।

भाषाटीकासहितम् ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

प्रणम्य भारतीं भक्त्या गणेशं च गजाननम् ।
समाहृत्यान्यग्रन्थेभ्यो होड़ाचक्रं विरच्यते ॥१॥

आदित्यः, शोमः, मंगलः, बुद्धः, बृहस्प-
तिः, शुक्रः, शनैश्चरः, इति सप्त वाराः ॥ प्रति-
पदा१ द्वतीया २ तृतीया ३ चतुर्थी ४ पंचमी ५
...ठी ६ सप्तमी ७ अष्टमी ८ नवमी ९ दशमी १०
...दशी ११ द्वादशी १२ त्रयोदशी १३ चतुर्द-
...४ कृष्णपक्षे आमावास्या ३० शुक्लपक्षे

पौर्णिमाशी १५ इति पंचदश १५ तिथयः ॥ ३ ॥ चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशिरः, पौषः, माघः, फाल्गुणः, इति द्वादशमासाः ॥

अर्थ---भक्तिकरके सरस्वतीको प्रणामकरके तथा हस्ती के मुखसदृश मुखवाले गणेशजीको नमस्कारकर, अन्य ग्रंथों से संग्रह करके, होडाचक्र रचते हैं ॥ १ ॥ आदित्य १ सोम २ इत्यादिये सातवार हैं॥२॥ प्रतिपदा १ द्वतीया २ इत्यादिक पंद्रह तिथियां हैं ॥ ३ ॥ चैत्र १ वैशाख २ इत्यादि बारह महीने हैं ॥ ४ ॥

वसंतः, ग्रीष्मः, वर्षाः, शरदः, हेमन्तः, शिशिरः, इति षड् ऋतवः ॥ ५ ॥ अयने दक्षिणायनोत्तरायणे ॥ ६ ॥ मेषः, वृषः, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक धनु, मकर, कुंभ, मीनः, इति द्वादश राशयः ॥ ७ ॥ अ[illegible]नी भरणी, कृतिका, रोहणी, मृगशिरा, आ[illegible] सुः, पुष्यः आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गु[illegible] फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढा, अभजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, ॥ इति अष्टाविंशतिनक्षत्राणि ॥ ८ ॥

अर्थ—वसन्त आदि ये छै ऋतु हैं ॥ ५ ॥ दक्षिणायन १ उत्तरायण २ ये दो अयन हैं ॥ ६ ॥ मेष १ वृष २ इत्यादि बारह राशियां हैं ॥ ७ ॥ अश्वनी १ भरणी २ इत्यादि अट्ठाईस नक्षत्र हैं । तहां अभिजित क्रमसे वर्तमान नहीं है इसलिये मुख्य सत्ताइसही नक्षत्र हैं ॥ ८ ॥

विष्कुंभः प्रीतिः आयुष्मान्ः सौभाग्यः शोभनः अतिगंडः सुकर्मा धृतिः शूल. गंडः, वृद्धिः ध्रुवः व्याघातः हर्षणः वज्रः सिद्धिः व्यतीपातः वरीयान्ः परिघः शिवः सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लः ब्रह्मः ऐन्द्रः वैधृतिः ॥ इति सप्तविंशतयोगाः ॥ ९ ॥ चूचेचोला-अश्वनी. लीलूलेलोभरणी आइउए कृत्तिका. ओवावीवूरोहिणी. वेवोकाकी मृगाशिर. कूघङछआर्द्रा. केकोहाहीपुनर्वसु. हूहेहोडापुष्य.

डीडूडेडो आश्लेषा. मामीमूमेमघा. मोटाटीटू-
पूर्वा फाल्गुनी. टेटोपापीउत्तरफाल्गुनी. पूषा-
णाठाहस्त. पेपोरारीचित्रा. रुरेरोतास्वाती. ती-
तूतेतोविशाखा. नानीनूने अनुराधा नोया-
यीयूज्येष्ठा. येयोभाभीमूल. भूधाफाढापूर्वा-
षाढा. भेभोजाजी उत्तराषाढा. जूजेजोखाअ-
भिजित् खीखूखेखोश्रवण गागीगूगेधनिष्ठा.
गोसासीसूशतभिषा. सेसोदादीपूर्वाभाद्रपदा.
दूथझत्र उत्तराभाद्रपदा देदोचाचीरेवती इति
जन्मनक्षत्राणि

अर्थ—विष्कुंभ १ प्रीति इत्यादि सत्ताईस योग हैं।
९। जिस मनुष्य के नाम उच्चारण में पहिला अक्षर चू,
चे, चो, ला इनमें कोई हो तो उसका अश्विनी नक्षत्र होता
है, और अश्विनी नक्षत्र में जन्मने वालेका नामभी इन
अक्षरोंपर निकालना. ये चार अक्षर क्रमसे चार चरणों
हैं. इसी तरह ली लू ले लो भरणी है. सबका क्रम मूल
लिखे के अनुकूल जानना. ऐसे जन्म नक्षत्र हैं ॥ १० ॥

॥ जन्म राशी ॥

चू चे चो ला लि लु ले लो अ मेष। इ उ ए
ओ वा वि वु वे वो वृष। क कि कु घ ङ
छ के को हो मिथुन। हि हु हे हो डा
डि डु डे डो कर्क। म मि मु मे मो टा टि
टु टे सिंह। टे टो पे पि पु ष ण ठ प पो
कन्या। र रि रु रे रो ता ति तु ते तुला।
तो न नि नू ने नो या यि यु वृश्चिक।
जे जो भे भि भू ध फा ढा भे धन। भो
ज जि षि षु षे षो ग गि मकर। गु गे
गो शा शि शु से सो द कुंभ। दि दु थ
झ भ दे दो च चि मीन ॥ ११ ॥

अर्थ—जिस मनुष्य के नाम उच्चारण में पहिला अक्षर
चु चे चो ला लि लु ले लो अ इन अक्षरों में कोई हो तो
उसकी राशि मेष होती है इसी तरह क्रम २ से बारह रा-
शियों को जानना चाहिये ॥

अथ चन्द्रविचारः ॥ अश्विनी भरणी
कृत्तिका पादे मेषः १ कृत्तिका यास्त्रयः

पादा रोहिणी मृगशिरोर्द्धं वृषः २ मृगशि-
रोर्द्धमाद्रा पुनर्वसु पादत्रयं मिथुनम् ३ पु-
नर्वसु पादमेकं पुष्या श्लेषान्त कर्कः ४ मघा
च पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा पादे सिंहः ५ उत्तरा
यास्त्रयः पादा हस्तश्चित्रार्द्धं कन्या ६
चित्रार्द्धं स्वाती विशाखा पादत्रयं तुला ७
विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठांत वृश्चि-
कः ८ मूलं च पूर्वाषाढा उत्तरापादे धनः ९
उत्तरा यास्त्रयः पादाः श्रवण धनिष्ठार्द्धं
मकरः १० धनिष्ठार्धं शततारका पूर्वा भा-
द्रपदा पादत्रयं कुम्भः ११ पूर्वाभाद्रपद पा-
दमेकं उत्तरा रेवत्य तं मीनः १२ ॥ इति चद्रूरा-
शिः ॥ पूर्वा, आग्नेयी, दक्षिणा, निर्ऋती, प-
श्चिमा, वायवी, उत्तरा, ईशानी, इति दिशः ॥

शनौ चंद्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणस्या गुरौ
तथा ॥ सूर्ये शुक्रे पश्चिमाया बुधे भौमे
तथोत्तरे ॥ इति दिक्शूलम् ॥

अर्थ—अथ चंद्रविचार। अश्विनी, भरणी, कृतिका
का एक चरण, इतने तक मेष का चंद्रमा रहता है और
कृत्तिका के तीन चरण, संपूर्ण रोहिणी, मृगशिर आधा
तब तक वृष का चंद्रमा रहता है सूर्य आदि अन्य भी
सब ग्रह नक्षत्रों पर इसी तरह भोगते हैं परंतु विशेष दिन
ठहरते हैं उनकी संख्या आगे लिखेंगे इसी प्रकार
मूल में लिखे हुए क्रम से सब राशियों पर चन्द्रमा की
भुक्ति जाननी. इति चंद्रराशि विचारः। पूर्व अग्निकोण आदि
ये आठ दिशा हैं. इति दिशा। शनि और सोमवार को पूर्व
दिशा में नहीं जाना, बृहस्पति के दिन दक्षिण में नहीं
जावे, रविवार तथा शुक्रवारको पश्चिम में नहीं जावे
बुध मंगल को उत्तर में नहीं जावे। इति दिक्शूलं।

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे बृषे च कन्या
मकरे च याम्ये ॥ युग्मे तुलायां च घटे प्रती-
च्यां कर्कालि मीने दिशि चोत्तरायाम् ॥ १ ॥
इति चंद्रमावासः ॥ सन्मुखे अर्थ लाभाय पृष्ठे
चन्द्रे धनक्षयः ॥ दक्षिणे सुख संपत्तिर्वामे तु
मरणं भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ—मेष, सिंह, धन इन राशियों पर चंद्रमा हो तब
पूर्व दिशामें जानना, वृष, कन्या, मकर इन राशियों पर हो

तब दक्षिण दिशा में जानना, मिथुन, तुला कुंभ इन राशियों पर चंद्रमा हो तब पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियों पर हो तब उत्तर दिशा में जानना॥इति चंद्रमा वासः ॥ १ ॥ सन्मुख चंद्रमा में धन की प्राप्ति, पीठपर हो तब धन नाश, दाहिने हाथकी तरफ़ सुख संपत्ति करै २ बांयीं तरफ़ हो तो मरण करै ॥ २॥ इति यात्रा काले चंद्रवास फलम् ॥

प्रतिपदा या नवम्या पूर्वस्या दिशि योगिनी ॥ - अग्नि कोणे तृतीया यामेकादश्या तु सास्मृता ॥ २ ॥ त्रयोदश्या च पञ्चम्या दक्षिणस्या शिवप्रिया ॥ द्वादश्यां च चतुर्थ्यांच नैऋत्ये योगिनी स्मृता ॥ ४ ॥ चतुर्दश्यां च षष्ठ्या च पश्चिमायां च योगिनी ॥ पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायु कोणे तु पार्वती ॥ ५ ॥ दशम्यां च द्वितीया यामुत्तरस्यां शिवा भवेत् ॥ ईशान्यां अमावस दर्श अष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥ ६ ॥ योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदा

यिनी ॥ दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरण प्रदा ॥ ७ ॥ इति योगिनीचक्रम्

अर्थ—प्रतिपदा और नवमीको पूर्व दिशामें योगिनी रहतीहै, ॥ १ ॥ एकादशी और तृतियाको आग्नकोणमे रहती है॥ २॥ त्रयोदशी पंचमीको दक्षिणमें योगनी रहतीहै ॥ ३॥ द्वादशी चतुर्थीको नैऋत्यकोणमें योगनी कहीहै ॥ ४ ॥ चतुर्दशीवा षष्टी को पश्चिममे योगनी और पूर्णिमाकी सप्तमीको वायकोणमें योगनी रहतीहै ॥ ६॥ दशमी औरै द्वितीयाको उत्तरमैं अठैंवा अमावस्याको ईशानेकोणमें योगनी रहती है ॥ ६ ॥ बांयीं तर्फ़ योगनी सुखदायीहै' पीठ बिषे, सिद्धमनोरथ करनेवाली दहनी तर्फ धनकोहरने वाली सम्मुख हो तो मरण करनेवाली है ॥ ७ ॥ इतियोगनी चक्रम् ॥

अथ भद्रा ॥ दशम्या च तृतीया या कृष्णे पक्षे परे दले ॥ सप्तम्या च चतुर्दश्या विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ ८ ॥ एकादश्या चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे परे दले ॥ अष्टम्यां पूर्णिमायांच विष्टिःपूर्वदले स्मृता॥९॥

अर्थ-कृष्णपक्षकी दशमी और तृतीया तिथिविषे परद-लमें अर्थात् आधी तिथि बितेपर पिछले अर्द्धभागमें भद्रा रहती है और कृष्णपक्षकी सप्तमी, चतुर्दशीको पूर्वदलमें भद्रा रहतीहै ॥ ८ ॥ एकादशी चतुर्थीको शुक्लपक्षमें पर-दलमें भद्रा रहतीहै, शुक्लपक्षकी अष्टमी और पूर्णमाशीको पूर्वदलमें भद्रा रहतीहै ॥९॥

मेषमकर वृषकर्कटस्वर्गे कन्या मिथुन-तुला धननागे ॥ कुम्भमीन अलिकेसरि-मर्त्ये विचरति भद्रा त्रिभुवन मध्ये ॥ १० ॥ स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात्पाताले च धनागमम् ॥ मृत्युलोके यदा भद्रा सर्व कार्य विनाशिनी ११

अर्थ-मेष, मकर, वृष, कर्क इन राशियों का चंद्रमा हो तब स्वर्ग में॥ कन्या, मिथुन, तुला, धन इनका चंद्रमा होतब पातालमें॥ कुंभ, मीन, वृश्चक, सिंह इनका चंद्रमाहो तब मृत्युलोकमें भद्रा होती है, ऐसे तीनों भुवनों में भद्रा विचरती है ॥ १० ॥ स्वर्ग में भद्रा होतो शुभकार्य हो, पातालमें हो, तो धनका आगमन हो॥ मृत्यु लोकमें भद्राहोतो सब कार्य नष्ट होवे ॥११॥

सन्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले ऽधो-

मुखी तथा ॥ ऊर्ध्वस्था स्वगगा भद्रा स-न्मुखे मरणप्रदा ॥ १ ॥ २ ॥ प्राच्याभद्रा चतुर्दश्या माग्नेय्या मष्टमी तिथौ ॥ सप्तम्या दक्षिणस्या वै नैर्ऋत्या पौर्णिमा तिथौ ॥ १३ ॥ पश्चिमाया चतुर्थ्यां च वायव्या दशमी तिथौ ॥ एकादश्या मुत्तरे स्यादी-शान्या गिरिजा तिथौ ॥ १४ ॥ भद्रामुखे च यो याति क्रोशमेकं तू नोत्तरम् ॥ पुन रागमनं नास्ति नद्योहीं सागराद्यथा ॥ १५ ॥

अर्थ—और मृत्युलोक में होतो सन्मुख जाननी, पाताल में हो तो अधोमुख (नीचेकोमुख है जिसका ऐसी) जाननी; स्वर्गमें हो तो ऊर्ध्व स्थित है. तहां सन्मुख भद्रा मृत्यु करनेवाली है ॥ १२ चतुर्दशी को भद्रा पूर्व में रहती है; अष्टमी को अग्निकोण में, सप्तमी को दक्षिण दिशा में पूर्णमासी को नैऋति कोण में रहती है ॥ १३ ॥ चतुर्द-शी को पश्चिम दिशा में, दशमी को वायव्य में और एकाद-शी को उत्तर में, तृतीया को ईशानी में भद्रा रहती है ॥१४॥ जो पुरुष भद्रा के मुख में (सन्मुख) एक कोश भी जाता

है कछु दूर नहीं जाता तो भी उसका फिर लौट आना नहीं होता. जैसे समुद्र में से नदी उलटी नहीं आती ॥ १५ ॥

॥ इति भद्रा ॥

मेषसिंहवृषा रक्ताः कुञ्जरो वाहनं भवेत् ॥ युग्मकन्याधनुः पीतमश्वः सवाहनं भवेत् ॥ १६ ॥ नक्रमीनघटाः कृष्णा माहिषो वाहनं भवेत् ॥ अलिकर्कतुलाः श्वेता वृषभो वाहनं भवेत् ॥१७॥रक्तचन्द्रभवेद्युद्धं श्वेतचन्द्रेसुखी भवेत् ॥ पीतचन्द्रे महालाभः कृष्णचन्द्रे महा भयम् । १८ ।

अर्थ—मेष, सिंह, वृष इनके चन्द्रमा विषे संक्रांति बैठी हो तो लाल वर्ण, हस्ती वाहन होता है; मिथुन कन्या धनु ये तीनों पीतवर्ण हैं अश्व वाहन हैं ॥ १६ ॥ मकर कुंभ, मीन, कृष्णवर्ण हैं' माहिष वाहन हैं' वृश्चिक, कर्क, तुला श्वेतवर्ण हैं वृषभ वाहन हैं,ऐसे बताओ ॥१७॥ रक्तचद्रमा हो तो युद्धहो, श्वेत चंद्रमाहो तो सुखीहो पीत चंद्रमा हो तो महालाभहो, कृष्णचंद्रमा विषे महाभय हो ।१८॥

चन्द्रभूतै ग्रहनेत्रा रसै दिग्वह्निसागराः ॥ वेदाः सिद्धिशिवौदित्यौ घात चंद्राः प्रकीर्तिताः ॥ १९ ॥ रोगे मृत्यूरणे भंगो यात्राकाले च बंदनम् ॥ विवाहे विधवानारी घात चंद्रफलं भवेत् ॥२० ॥

अर्थ—अथ घातचंद्रविचारः । घातचंद्र कहिये एक १,पांच५, नव९,दो२ छह६, दश१०, तीन३,सात७ चार४, आठ८, ग्यारह११, बारह१२, ऐसे ये चंद्रमामेष आदि राशियोंके क्रमसे घातक होते हैं, जैसे मेषको १ वृषको ५घातक चंद्रमा हैं, ऐसे सब जानो॥ १९ ॥ घातचंद्रमामें रोग उत्पन्न हो तो मृत्युहो, युद्धमें जावे तो भंगहो, यात्रा बंधनहो, विवाहमें विधवा स्त्रीहो, ऐसा घातचंद्रमाका फल है ॥ २० ॥ इतिघात चंद्रफलम ॥

अथ ग्रहाणा भुक्तसंख्या ॥सप्तविंशति शुक्रः स्यादेकाविंशद्बुधस्तथा॥त्रिपक्षं भूमिपुत्र स्तुमासमेकंतु भास्करः ॥२१॥ गुरुस्त्रिदशमासां श्च त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः ॥ राहुकेतु सार्धवर्ष

ग्रहसंख्या विधीयते॥२२॥इति ग्रहाणा भुक्तसं-ख्या ॥

अर्थ शुक्र २७ दिन तक, बुध २१ दिनतक मंगल डेढ़ महीनातक सूर्य एक महीनातक राशिपर रहता है ॥ २१ ॥ बृहस्पति तेरह महीनोतक, शनि अढ़ाई वर्षतक ठहरे, राहु केतु डेढ़ वर्षतक ठहरे, ऐसी ग्रहों की (राशिपर) ठहरनेकी संख्या कही है ॥ २२ ॥ इति ग्राहाणा भुक्तसंख्या ॥

आद्यश्चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनोहर्षं द्वितीयकः ॥ तृतीयो धनसांत्तिंचतुर्थः कलहागमम् ॥२३॥पञ्चमो ज्ञानवृद्धिचषष्ठः संपत्ति मुत्तमम्॥ सप्तमो राजसन्मानं मरणं चाष्टमस्तथा ॥२४॥ नवमोधर्मलाभंच दशमो मनसेप्सितम् ॥ एकादशः सर्भलाभं द्वादशो हानिमेव च ॥ ॥ २५ ॥ इति चन्द्रद्वादशराशयः ॥

अर्थ—जन्म का चंद्रमाहो तो लक्ष्मी की प्राप्ति करै दूसरा चंद्रमा मनमें आनन्द करै, तीसरा धनसंपतिःचौथा कलह कारक ॥२३॥पांचवां ज्ञान की वृद्धि, छटवां उत्तम

सम्पत्ति देवै, सातवां राजा से सन्मान, आठवां मरण देता है ॥ २४ ॥ नवमा धर्म लाभ, दशवां मनचाहा काम, ग्यारहवां सब लाभ, बारहवां हानि करता है ॥ २५ ॥ इति चन्द्रद्वादशराशयः ॥

अनुराधात्रयं हस्तो मृगाश्वौ चादिति द्वयम् ॥ यात्राया रेवती शस्ता निन्द्यार्द्रा भरणी द्वयम् ॥ २६ ॥ मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमाः ॥ सर्वदिग्गमने हस्तः पूषा च श्रवणो मृगः ॥ २७ ॥ सर्व सिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ २८ ॥ इति यात्रा गमन नक्षत्राणि ॥

अर्थ—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, मृगशिर, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, ये नक्षत्र यात्रा में शुभ कहे हैं आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका ये अशुभ हैं ॥ २६ ॥ और मघा तीनों उत्तरा, विशाखा, आश्लेषा ये भी अशुभ हैं, अन्य नक्षत्रमध्यम हैं, और हस्त, रेवती, श्रवण,मृगशिर ये नक्षत्र सब दिशा की यात्रा मे शुभ हैं ॥ २७ ॥ पुष्य नक्षत्र सब बातों की सिद्ध करने वाला ऐसा है जैसे विद्या में गुरु ॥ ॥ २८ ॥ इति यात्रा गमननक्षत्राणि ॥

अथ वर्गाः । अइउए गरुड़ १ कखगघङ बिडालः २ चछजझञ सिंह ३ टठडढण श्वानः ४ तथदधन सर्पः ५ पफबभम मूषकः ६ यरलव मृगः ७ शषसह मेषः ८ ॥ २९ ॥ स्ववर्गात् पञ्चमे शत्रुश्चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ॥ उदासीनस्तृतीयः स्याद्वार्ग भेदस्त्रिधोच्यते ॥ ३० ॥ धनजन्मनि पञ्चम सप्तमगाश्चतुरष्टमद्वादशधर्मयुताः ॥ धन धान्य हिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चर भूमिसुताः ॥ ३१ ॥ मीनाजौ सार्धतिस्रः स्युर्घट्यः पादोनपञ्चकम् ॥ वृषकुम्भौ तथा तथा ज्ञेयौ पादानं षट्पराशि च ॥ ३२ ॥ इति लग्नज्ञानम् ॥

अर्थ—अथ वर्गाः । जिसके जन्म नाम में पहले अ इ उ ए ये स्वर वाले जाते हैं, उसका गरुड़ वर्ग होता है, इसी तरह सब जानों १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ ॥ २९ ॥ अपने वर्ग से पांचवां वर्ग शत्रु है, चौथा मित्रसंज्ञक है, तीसरा उदासीन है, ऐसा वर्ग भेद तीन प्रकार

का कहा है ॥ ३० ॥ दूसरी, जन्मकी, पांचवीं, सातवीं, चौथी, आठवीं, बारहवीं, नवमीं, राशिपर प्राप्त हुए सूर्य, राहु, शनैश्चर, मंगल ये ग्रह धन धान्य सुवर्ण को नष्ट करें, यह ग्रह गोचर देखने का विचार है ॥ ३१ ॥ मीन, मेष, लग्न साढ़े तीन घड़ी. वृष, कुंभ पौने पांच ४॥ घड़ीतक रहे. और अन्य लग्न पौने छै ५॥ घड़ीतक ठहरते हैं, यह स्थूल मत है ॥ ३२ ॥ इति लग्न ज्ञानम् ॥

अर्कोत्तरे वायु दिशां च सोमे प्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च ॥ याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ॥ ३३ ॥ इति कालि विज्ञानम् ॥

अर्थ—रविवारके दिन उत्तर दिशा में, सोमवार को वायु दिशामें, मंगल बारको पश्चिममें, बुधवार को नैर्ऋत्यकोणमें, बृहस्पति को दक्षिणमें, शुक्रको अग्निकोण में शनिको पूर्वमें कालयोग रहता है, इस कालयोग के सन्मुख गमन नहीं करना ॥ ३३ ॥ इति काल विचारः ॥

अथ राशिस्वामिनः ॥ मेष वृश्चिक योर्भौमः ~~कर्क स्वामि~~पः ॥ बुध, कन्या मिथुन योश्चन्द्रमाः कर्कटाधिपः ॥ ४ ॥ जीवो मीन धनुः

स्वामी शनिर्मकर कुंभयोः ॥ सिंहस्या धिपति सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥ ३५ ॥ बवश्च बालैश्चैव कौलवस्तै तिलस्तथा ॥ गरश्च वणिजो विष्टि सप्तैव करणानि च ॥ ३६ ॥ नन्दाशुक्रे बुध भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ॥ गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगाः शुभेशुभाः ॥३७॥

अर्थ—अथ राशिस्वामी ॥ मेष वृश्चिकका स्वामी मंगल वृष तुलाका पति शुक्र, कन्या मिथुन का बुध और कर्क का स्वामी चन्द्रमा है ॥ ३४ ॥ मीन धनका स्वामी बृहस्पति है मकर कुंभका स्वामी शनि है, और सिंहका पति सूर्य कहा है ॥३५॥ बब बालव कौलव, तैतिल, गर, वणिज, बिष्टि ये सात करण है. ॥ ३६ ॥ शुक्रवारमें नंदा, बुधमें भद्रा शनिके दिन रिक्ता, मंगलको जया, बृहस्पति को पूर्णा तिथि हो; तो यह सिद्धि योग है. शुभ कर्म में शुभदायक है ॥ ३७ ॥

त्र्यंगुलं शंकुमादाय छायो त्रिसमन्विता ॥ चतुः षष्ट्या हरेद्भागं लब्धं

घटिपलात्मकम् ॥ ३८ ॥ हस्तादि पञ्चकेऽश्विन्या धनिष्ठाया च पूषाणि ॥ गुरौ शुक्रे बुधेवारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥ ३९ ॥

इति स्त्रीनववस्त्रधारणम् ।

अर्थ—अथ दिनमानविचार । तीन अंगुल का शंकुले छाया नाप, जिसमें तीन मिला उस लब्ध अंकका भाग चौसठ में देवे लब्ध को घड़ी जाने, बाकी रहे को साठ गुना कर उसी अंकका भाग देके पल जानें ॥३८॥ हस्त से आदि ले पांच नक्षत्र, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों में बुध, बृहस्पति, शुक्रवारविषे स्त्रियों को नवीन वस्त्र धारण करना चाहिये ॥३९॥ इति स्त्रीनवीनवस्त्रधारणम् ।

लग्ने मीने च कन्याया मिथुने च वृषे शुभम् । पूष्यपुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषुच ॥४०॥

इति पुरुषवस्त्रधारणम् ॥

अर्थ—मीन, कन्या, मिथुन, वृष इन लग्नों में; रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में पुरुष को नवीन वस्त्र धारण करना चाहिये ॥ ४० ॥ इति पुरुष वस्त्रधारणम् ॥

नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तमशेषतः ॥

वाराधिको सूर्यभौमौनक्षत्रे श्रवणो मृगः ॥४१॥
इति नवान्नभोजनम् ॥

अर्थ—जो नवीन वस्त्र धारण में कहे हैं विशेष करके बहां, वार नक्षत्र आदि नवीन भोजन करने में ग्रहण करने चाहिये. परन्तु रवि, भौम ये अधिक वार लेने. श्रवण, मृगशिरनक्षत्र लेने ॥ ४१ ॥ इति नवान्न भोजनम् ।

धनिष्ठापञ्चके त्याज्यस्तृणकाष्ठादिसंग्रहः ॥
त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा गृहाच्छादनमेवच॥४२॥
इति पंचकम ॥ तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ॥ बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःख शनौसुखम् ॥ ४३ ॥ रवौ पुष्प गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ॥गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यंगे न दोषभाक ॥ ४४ ॥ इति तैलाभ्यंगेम ॥

अर्थ—धनिष्ठा आदि पांच नक्षत्र पंचक हैं उनको तृण, काष्ठके आदिके संग्रह करनेमें त्यागे; दक्षिण दिशामें नहीं जावे, घरकी छत नहीं दिवावे ॥ ४२ ॥ इति पंचकम् ॥ रविवार के दिन तेल लगावे तो ताप (ज्वर)

हो, सोमवार के दिन शोभा, मंगल को मृत्यु, बुध को धन प्राप्ति, बृहस्पति को हानि, शुक्रवार को दुःख, शनिको सुख हो ॥ ४३ ॥ रविवार को तेल में पुष्प गेरना, बृहस्पति को दूब गेरनी, मंगल को मृत्तिका गेरनी, शुक्रवार को तेल में गोबर गेरना, फिर इन वारों में भी तेल लगाने का दोष नहीं होता है ॥ ४४ ॥ इति तैलाभ्यंगम ॥

नंदा सूर्य च भौमे च भद्राभार्गवचंद्रयो ॥
बुध जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णाच मृत्युदा ॥
४५ ॥ इति मृत्युयोगाः ॥

अर्थ—रविवार और मंगलवार को नंदा तिथि हो, सोम शुक्रवारको भद्रा तिथि, बुध को जया, बृहस्पति को रिक्ता शनिवार को पूर्णा तिथि हो तब मृत्यु योग होता है॥
इति मृत्यु योगाः ॥

पितापुत्रैर्न गंतव्यं न गच्छेद्भ्रातृकद्वयम् ॥
नवनार्य्यो न गच्छेयुर्न गच्छेद् ब्राह्मणत्रयम ॥
॥४६॥ हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाश्विनी ॥ बुधे मैत्रं गुरौ पुष्यं रेवती भृगुनन्दने ॥ ४७ ॥ रोहिणी रविपुत्रे च सर्वसिद्धिप्रदाय-

कः ॥ आसाव मृतसिद्धिः स्याद्योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥ ४८ ॥ इति सिद्धियोगः ॥

अर्थ–पिता पुत्रों को संग नहीं जाना चाहिये, दोभाइयोंने भी साथ नहीं जाना, नव स्त्रियों ने साथ नहीं जाना तीन ब्राह्मणों ने नहीं जाना ॥ ४६॥ रविवार को हस्त नक्षत्र हो, सोमवार को मृगशिर, मंगल को अश्विनी, बुध को अनुराधा, बृहस्पति को पुष्य हो, शुक्रवारमें रेवती नक्षत्र हो ॥ ४७ ॥ शनि के दिन रोहिणी तब सब सिद्धि को देने वाला यह अमृतसिद्धि नामक योग पुरातन पंडितों ने कहा है ॥ ४८ ॥ इति अमृत सिद्धि योगाः ॥

ग्रामस्य यद्भवंदृक्ष तदाद्याः सप्त मस्तके ॥ पृष्ठे सप्त हृदि ह्येव पादयोः सप्त तारकाः॥४६॥ मस्तके च धनी मान्यः ॥ हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं भवेत् ॥ ॥ ५० ॥ इति ग्रामवासफलम् ॥

अर्थ—जो ग्राम का नक्षत्र हो उससे आदि सात नक्षत्र मस्तक पर धरने, पीठ पर सात, हृदयपर सात, पैरोंपर सात ७ नक्षत्र धरने ॥ ४६ ॥ वर्तमान नक्षत्र मस्तक पर हो तो ग्राम में बसने वाला धनी और मान्य हो, पीठ पर हानि और

निर्धन हो, हृदय पर सुख संपत्ति हो, पैरों में हो तो भ्रमता फिरै ॥ ५० ॥ इति ग्राम वास फलम् ॥

हस्तत्रये ब्राह्मयुगे मघायां पुष्ये धनिष्ठा श्रवणोत्तरेषु ॥ मूलानुराधाहयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ॥ ५१ ॥ आश्लेषाद्वितयं स्वातीं रोहिणीं च पुनर्वसुम् ॥ रोगिस्नाने रेवतीं च वर्जयेदुत्तरात्रयम् ॥ ५२ ॥ रिक्तातिथौ चरे लग्ने वारेन रविभौमयोः ॥ स्नान च रोगिणा प्रोक्तं द्विजभोजनसंयुतम् ॥ ५३ ॥ इति रोगिस्नान

अर्थ–हस्त आदि तीन नक्षत्र मृगशिर, मघा, पुष्य, धनिष्ठा, श्रवण, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रों में, स्थिर लग्न में (घरमें) बधू प्रवेशकराना ॥५१॥ आश्लेशा, मघा, स्वाती, रोहिणी, पुनर्बसु, रेवती, तीनों उत्तरा, इनमें रोगी को स्नानन्नकरावे ॥ ५२ ॥ रिक्ता तिथि, चरलग्न, रवि, मंगलवार इनविषे रोगी को स्नान कराके ब्राह्मणों को भोजन करावै ॥ ५३ ॥ इति रोगिस्नानम् ॥

षष्ठीषु तैलं पलमष्टमीषु क्षौरक्रिया नैवचतुर्दशीषु ॥ स्त्रीसेवनं नष्टकलासुपुंसा मायुःक्षतार्थ

मुनयो वदन्ती ॥ ५४ ॥ ग्रामस्यर्त्तं समारभ्य सूर्यभं यत्र तिष्ठति ॥ पंचमे द्वादश वापि एकोन विंश विंश योः ॥५५॥ एक विंशचतुर्विंशषु विंशत्तु तथैवच ॥ एतानि सप्त ऋक्षाणि ग्रामे नो सुखदानि च ॥५६॥

अर्थ—छट तिथि को तेल नहीं लगाना, अष्टमी को मांस नहीं खाना चतुर्दशी क्षौर (हजामत) नहीं करानी, अमावास्या के दिन स्त्री संग नहीं करना जो नर करते हैं उनकी आयु नष्ट होती है ॥ ५४ ॥ ग्राम के नक्षत्र सूर्यके नक्षत्र तक गिनना. तहां पांचवां, बारहवां, उन्नीसवां, वीसवां ॥ ५५ ॥ इक्कीसवां, चौबीसवां, छब्बीसवां, इन सात नक्षत्रों को त्याग देवै, इनमें ग्राम में वसे तो सुख नहीं हो ॥५६॥ इति होडाचक्र भाषाटीका समाप्ता। यह सरल भाषाटीका बालकों के हितके वास्ते बेरीपुर निवासी पंडित बस्तीरामजी ने बनाई है, इसके मूल श्लोक भी शुद्ध करादिये हैं ॥

इति होडाचक्रं समाप्तं ।

पुस्तकें मिलने का पता—

जोतसिंह संतसिंह पबलिशर्स व ताजरान कुतुब
लुहारी दरवाज़ा लाहौर

कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन ये १२ राशि हैं ॥ ७ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, और रेवती ये २८ नक्षत्र हैं ॥ ८ ॥

भाषाटीका—अश्विनी, भरणी ... नक्षत्र हैं किन्तु अभिजित् क्रम से ... इसलिये मुख्य २७ ही नक्षत्र हैं ... ही ... अक्षरों पर ... चरणों के हैं। ... इत्यादि के ... जानना । ध्या ...

विष्कम्भ, प्रीति, अ... शोभन, अतिगण्ड, सु... स्त नक्षत्र के ... जगह क्रम से ग, ड, ज,

वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र और वैधृति ये २७ योग हैं ॥ ९ ॥

चूचेचोला अश्विनी, लीलूलेलो भरणी, अइउए कृत्तिका, ओवावीवू रोहिणी, वेवोकाकी मृगशिरा, कुघङछ आर्द्रा, केको [illegible]ही पुनर्वसु, हूहेहोडा पुष्य डीडूडेडो [illegible] मामीमूमे मघा, मोटाटीटू पूर्वा- [illegible] टोपापी उत्तराफाल्गुनी, पूष- [illegible] पेपोरारी चित्रा, रूरेरोता स्वाती, [illegible] ाखा, नानीनूने अनुराधा, [illegible] येयोभाभी मूल, भूधफढ [illegible] उत्तराषाढ, जूजेजोखा

अभिजित्, खीखूखेखो श्रवण. गागीगूगे धनिष्ठा, गोसासीसू शतभिषा, सेसोदादी पूर्वाभाद्रपद, दूथझञ उत्तराभाद्रपद, देदो चाची रेवती ये २८ नक्षत्र के चार २ चरण में चार २ वर्ण हैं। इनमें जहां ह्रस्व स्वर हैं वहां दीर्घ भी जानना ॥

भाषाटीका–जिस मनुष्य के नामोच्चारण में पहला अक्षर चू, चे, चो, ला, इसमें से कोई हो तो उसका अश्विनी नक्षत्र होता है और अश्विनी नक्षत्र में जन्मवाले का नाम भी इन्हीं अक्षरों पर रखना। ये चार अक्षर क्रम से चार चरणों के हैं। इसी तरह ली लू, ले, लो, भरणी इत्यादि के [illegible] मूल में लिखे हुए के अनुसार जानना। ध्या[illegible] कि आर्द्रा के तीसरे चरण, हस्त नक्षत्र के २, ३ [illegible] और है इन अक्षरों की जगह क्रम से ग, ढ, ज,

इन अक्षरों को आदि में रखकर नाम रखना । इसी क्रमको जन्मनक्षत्र कहते हैं ।

अथ चन्द्रविचारः ।

अश्विनी भरणीकृत्तिकापादंमेषः ॥१॥ कृत्तिका त्रयः पादाः रोहिणी मृगशिरार्ऽर्धं वृषः ॥ २ ॥ मृगशिरसोऽर्धमाद्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ॥ ३ ॥ पुनर्वसुपादमेकं पुष्यमाश्लेषान्तं कर्कः ॥ ४ ॥ मघा पूर्वा फाल्गुन्युत्तरापादमेकं सिंहः ॥ ५ ॥ उत्तरा त्रयः पादाः हस्तश्चित्रार्धं कन्या ॥ ६ ॥ चित्रार्धंस्वाती विशाखापादत्रयं तुला ॥७॥ विशाखापादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥ ८ ॥ मूलं पूर्वाषाढोत्तरापादमेकं धनः ॥ ९ ॥ उत्तरात्रयः पादाः श्रवण धनिष्ठार्धं

मकरः॥१०॥धनिष्ठार्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपदपादत्रयं कुम्भः ॥११॥ पूर्वाभाद्रपदमेकमुत्तराभाद्रपदं रेवत्यन्ते मीनः ॥ १२ ॥

भा० टी०—अश्विनी, भरणी और कृत्तिका के एक चरण में मेष का चन्द्रमा रहता है, कृत्तिका के तीन चरण रोहिणी और मृगशिरा के आधे तक वृषका चन्द्रमा रहता है। इसी प्रकार मूल में लिखे हुए क्रम से सब राशियों पर चन्द्र की स्थिति जानना ।

अथ दिशः दिक्शूलञ्च ।

पूर्वाग्नेयदक्षिणनैर्ऋत्यपश्चिमवायव्योत्तरैशान्या इत्यष्टौ दिशः ।

शनौ चन्द्रे त्यजेत् पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तराम्

भा० टी०—पूर्व, अग्निकोण आदि ये आठ दिशा हैं। शनि और चन्द्रवार को पूर्वादिशा में,

गुरुवार के दिन दक्षिण में, रवि और शुक्रवार को पश्चिम में, बुध और मंगल को उत्तर दिशा में नहीं जाना यह दिशाशूल हैं ॥ १ ॥

अथ चन्द्रदिग्वासः ।

मेषे च सिंहे धनपूर्वभागे
वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां
कर्कालिमीने दिशिचोत्तरस्याम् ॥१॥

भा० टी०-मेष, सिंह और धन राशियों में पूर्व की ओर चन्द्रवास जानना, कन्या और मकर इन राशियों में दक्षिण, मिथुन, और कुम्भ इनमें पश्चिम, कर्क, वृश्चिक और मीन इन राशियों में उत्तर की ओर चन्द्रवास जानना ॥ १ ॥

अथ चन्द्रदिग्वासफलम् ।

सन्मुखे त्वर्थलाभः स्याद्दक्षिणे सुखसंपदः ।

पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥

भा० टी०-सन्मुख चन्द्रमा में धन का लाभ, दाहिनी हाथ की ओर सुख, सम्पत्ति मिलती है और पीछे हो तो धन की हानि, बाईं ओर हो तो मृत्यु होती है ॥ १ ॥

अथ योगिनीदिग्वासः ।

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैऋत्यां योगिनी स्मृता ।
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी ।
पूर्णमास्यां च सप्तम्यां वायुकोणे तु सा मता ३॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत् ।
ऐशान्यां दश चाष्टम्यां योगिनी तु सदा मता ४

भा० टी०-प्रतिपदा, नवमी को पूर्वदिशा में,

एकादशी, तृतीया को अग्निकोण में. त्रयोदशी पञ्चमी को दक्षिण में, द्वादशी, चतुर्थी को नैर्ऋत्यकोण में, त्रयोदशी, पञ्चमी को दक्षिण में, पूर्णमासी, सप्तमी को वायुकोण में, दशमी, द्वितीया को उत्तर में, अष्टमी, अमावास्या को ईशानकोण में योगिनी का वास रहता है ॥ ४ ॥

अथ योगिनीफलम् ।

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सन्मुखेमरणप्रदा ॥ १ ॥

भा० टी०—बाईं तरफ की योगिनी में सुख होता है, पीछे की मनोरथ सिद्ध करती है, दाहिनी ओर की धन को हरती है और सन्मुख योगिनी हो तो मरण होता है ॥ १

अथ तिथिवशतो भद्राविचारः ।

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।

सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ १ ॥
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ २

भा० टी०—कृष्णपक्ष की दशमी और तृतीया (तिथियों) के परदल में अर्थात् आधी तिथि के बीतने पर अर्धभाग में भद्रा रहती है । कृष्णपक्ष की सप्तमी, चतुर्दशी को पूर्वदल में भद्रा रहती है । शुक्लपक्ष की एकादशी, चतुर्थी को परदल में भद्रा रहती है और अष्टमी, पूर्णमासी को पूर्वदल में भद्रा रहती है ॥ १-२ ॥

अथ राशिवशतो भद्रानिवासफलम् ।

मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे,
कन्या मिथुन तुला धन नागे ।
घट मीनालि केसरिणि मर्त्ये,
विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये ॥ ३ ॥

स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम्।
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्यविनाशिनी ॥४॥

भा० टी०—मेष, मकर, वृष, कर्क इन राशियों का चन्द्रमा हो तो स्वर्ग में, कन्या, मिथुन, तुला, धन का चन्द्रमा हो तो पाताल में और कुम्भ, मीन, वृश्चिक, सिंह का चन्द्रमा हो तो मृत्युलोक में भद्रा होती है, ऐसे तीनों भुवनों में भद्रा विचरती रहती है। स्वर्ग में भद्रा हो तो शुभ होता है, पाताल में हो तो धन का आगमन और मृत्यु लोक में भद्रा हो तो सर्व कार्य नष्ट हो ॥३-४॥

अथ लोकवशतस्तिथिवशतश्च भद्राविशेषविचारः

सन्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी।
ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सन्मुखे मरणप्रदा ॥१॥
पूर्वे भद्रा चतुर्दश्यामाग्नेय्यामष्टमीतिथौ।
सप्तम्यां दक्षिणे चैव नैर्ऋत्यां पूर्णिमातिथौ ॥२॥

पश्चिमायां चतुर्थ्यां च वायव्यां दशमीतिथौ।
एकादश्यामुत्तरे स्यादैशान्यां गिरिजातिथौ ॥३॥
भद्रा मुखे नरो याति क्रोशमेकं परं किमु।
पुनरागमनं नास्ति नद्यो हि सागरं यथा ॥४॥

भा० टी०—भद्रा यदि मर्त्यलोक में हो तो सन्मुख जानना, पाताल में हो तो अधोमुखी (नीचे को मुख) है, स्वर्ग में हो तो ऊर्ध्वमुखी भद्रा होती है। इस तरह सन्मुख में भद्रा मृत्यु करनेवाला है। चतुर्दशी को पूर्व में, अष्टमी को अग्निकोण में, सप्तमी को दक्षिणदिशा में, पूर्णमासी को नैर्ऋत्यकोण में, चतुर्थी को पश्चिमदिशा में, दशमी को वायव्यकोण में, एकादशी को उत्तर में और तृतीया को ईशानकोण में भद्रा रहती है। जो पुरुष भद्राके मुख (सन्मुख) में एक कोस भी जाता है उसका फिर लौट आना नहीं होता, जैसे समुद्र से नदी उलटी नहीं आती ॥ १-४ ॥

अथ राशिवशतश्चन्द्रवर्णविचारः।

मेषसिंहवृषे रक्तः कुञ्जरो वाहनं भवेत्।
युग्मकन्याधनुश्चन्द्रः पीतोऽश्वो वाहनं भवेत्१
नक्रमीनघटे कृष्णो महिषो वाहनं भवेत्।
अलिकर्कतुले श्वेतो वृषभो वाहनं भवेत् २
रक्ते चन्द्रे भवेद्युद्धं श्वेते चन्द्रे सुखी भवेत्।
पीते चन्द्रे महालाभः कृष्णे चन्द्रे महाभयम्॥३॥

भा० टी०— मेष, सिंह, वृष, इन राशियों के चन्द्रमा का लालवर्ण और हस्ती वाहन, मिथुन, कन्या, धनु में पीत वर्ण और अश्व वाहन, मकर, कुम्भ, मीन में कृष्णवर्ण और महिष वाहन और वृश्चिक, कर्क, तुला में श्वेतवर्ण और वृषभ वाहन होता है। रक्त चन्द्रमा हो तो युद्ध, श्वेत चन्द्रमा हो तो सुखी, पीत चंद्रमा हो तो महालाभ और कृष्ण चन्द्रमा हो तो महाभय होता है॥१...३॥

अथ घातचन्द्रविचारः।

चन्द्रभूतग्रहानेत्ररसदिग्वन्हिसागराः।
वेदासिद्धिशिवार्काः स्युर्घातचन्द्रः क्रमान्नृणाम्॥
रोगे मृत्यु रण भंगो यात्राकाले तु बन्धनम्।
विवाहे विधवा नारी घात चन्द्रफलं विदम्॥२।

भा० टी०—एक १, पांच ५, नव ९, दो २, छः ६, दस १०, तीन ३, सात ७, चार ४, आठ ८, ग्यारह ११, बारह १२ ऐसे चन्द्रमा मेष आदि राशियों के मनुष्य के लिये क्रम से घातक होते हैं, जैसे मेषको पहला चन्द्रमा, वृषको ५ वां इत्यादि घातक चन्द्रमा जानना। घातक चन्द्रमा में रोग होय तो मृत्यु, युद्ध में जावे तो भङ्ग हो, यात्रा काल में बंधन और विवाह में स्त्री विधवा हो यह घातचन्द्रमा का फल है॥ १-२॥

अथ ग्रहराशिभोगकालः ।

मासं शुक्रो बुधः सूर्यः सार्धमासं महीसुतः ।
गुरुरब्दं तमः सार्धं शनिः सार्धाब्दकद्वयम् ॥१॥
तथा सपादद्विदिनं राशौ तिष्ठति चन्द्रमाः ।
ग्रहाणां राशिजो भोग एवमुक्तो विचक्षणैः ॥२॥

भा० टी०–शुक्र, बुध, सूर्य एक महीना, बृहस्पति एक वर्ष, राहु डेढ़ वर्ष, शनि अढ़ाई वर्ष तक एक राशिपर रहता है । उसी [illegible] से सवा दो दिन चन्द्रमा एक राशि पर रहता [illegible] का राशिभोग इसी चाल से है ॥ १–२ ॥

अथ चन्द्रद्वादशराशिफलम् ।

आद्यः चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनोहर्षं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिं चतुर्थे कलहागमम् ॥१॥
पञ्चमे ज्ञानबुद्धिं च षष्ठे सम्पत्तिमुत्तमाम् ।
सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥२॥

नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिमेव च ॥३॥

भा०टी०–जन्म (पहिला) चन्द्रमा में लक्ष्मी की प्राप्ति, दूसरे चन्द्रमा में मनको आनन्द, तीसरे में सम्पत्ति, चौथे में कलह, पांचवें में ज्ञान की वृद्धि, छठें में उत्तम सम्पत्ति, सातवें में राजा से सन्मान, आठवें में मरण, नवम में धर्म लाभ, दशवें में मन-चाहा काम, ग्यारहवें में सब तरह से लाभ और बारहवें में हानि करता है ॥ १–३ ॥

अथ यात्रा नक्षत्र विचारः ।

अनुराधात्रयं हस्तो मृगाश्वौ चादितिद्वयम् ।
यात्रायां रेवतीशस्तानिन्द्याऽऽर्द्राभरणीद्वयम् ॥१॥
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्येचमध्यमाः ।
सर्वदिग्गमने हस्तः पूषा च श्रवणो मृगः ॥ २ ॥

सर्व सिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा।

भा०टी०—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। अन्य नक्षत्र यात्रा में मध्यम हैं। हस्त, रेवती, श्रवण, मृगशिरा ये नक्षत्र सब दिशाकी यात्रा में शुभ हैं, पुष्य सब बातों का सिद्धि करनेवाला है, जैसे विद्या में गुरु॥ १–२॥

अथ वर्गाः ।

अइउए गरुडः १, कखगघङ बिडालः २, चछजझञ सिंहः ३, टठडढण श्वानः ४, तथदधन सर्पः ५, पफबभम मूषकः ६, यरलव मृगः ७, शषसह मेषः ८।

स्ववर्गात्पञ्चमःशत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः।
उदासीनस्तृतीयःस्याद्वर्गभेदस्त्रिधोच्यते १

भा० टी०—जिसके जन्मनाम में पहले अ इ उ ए स्वर वर्ण आते हैं उसका गरुड़ वर्ग होता है। इसी तरह आठो वर्गों का क्रम जानना अपने वर्ग से पांचवां वर्ग शत्रु, चौथा मित्रसंज्ञक और तीसरा उदासीन है। ऐसे वर्गों के भेद तीन प्रकार के होते हैं॥ १॥

अथ पापग्रहगोचरफलम् ।

धनजन्मनिपञ्चमसप्तमगा-
श्चतुरष्टमद्वादशधर्मयुताः ।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा-
रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥

भा० टी०—दूसरी, पहिली, पांचवीं, सातवीं, चौथी, आठवीं, बारहवां और नवीं राशि पर सूर्य, राहु, शनैश्चर और मंगल ये ग्रह हों तो धन, धान्य

और सुवर्ण का नाश करें । यह गोचर देखने का विचार है ॥ १ ॥

अथ कालज्ञानम् ।

अर्कोत्तरे वायुदिशे च सोमे
भौमे प्रतीच्यां बुद्धे नैऋतेच ।
याम्ये गुरौ वन्हिदिशं च शुक्रे
मन्दे च पूर्वा प्रवदन्तिकालम् ॥

भा० टी०—रविवार के दिन उत्तर दिशामें, सोमवार को वायु दिशा में, मंगलवार को पश्चिम में, बुधवार को नैऋत्यकोण में, बृहस्पति को दक्षिण में, शुक्र को अग्निकोण में और शनिको पूर्व में काल योग रहता है । इस कालयोग में सन्मुख गमन नहीं करना ॥ १ ॥

अथ काश्यां मेषादिलग्नमानानि ।

अजे मीने च पादोनाश्चतस्रो घटिकास्तथा ।

वृषे कुम्भे सपादाःस्युश्चतस्रो मृगयुग्मयोः
पञ्च घट्याऽश्वकर्के च त्र्यंशोनाः सनाडिकाः
सिंहऽलीषड्विपादाःस्युःशेषयोः सार्धपञ्चवै २

भा० टी०—मेष, मीन का मान २ नाड़ी ४५ पल, वृष, कुम्भ का ४ नाड़ी ५ पल, मिथुन, मकर का ५ नाड़ी, करकट, धनु का ५ नाड़ी ४० पल, सिंह, वृश्चिक का ६ नाड़ी ४५ पल और शेष कन्या, तुला का ५ नाड़ी ३० पल मान है ॥ १-२ ॥

अथ राशिस्वामिनः ।

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः
बुधःकन्यामिथुनयोःप्रोक्तः कर्कस्यचन्द्रमा
जीवोमीनधनुः स्वामीशनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यःकथितो गणकोत्तमैः १

भा० टी०—मेष, वृश्चिक का स्वामी मंगल,

...ति शुक्र, कन्या, मिथुन का बुध, ... चन्द्रमा, मीन और धनु का स्वामी ...र, कुम्भ का स्वामी शनि और सिंह ... पति सूर्य है ॥ १-२ ॥

अथ करणानि ।

ववश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
...रश्च वणिजो विष्टिः सप्तैव करणानि च॥१॥

भा० टी०–वव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, ...णिज, विष्टि ये सात करण हैं ॥ १ ॥

अथ सिद्धियोगः ।

...न्दा शुक्रे बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
...रौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेयः सिद्धियोगः शुभावहः॥१।

भा० टी०–प्रतिपदा, षष्ठी एकादशी, नन्दा । द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी, भद्रा । तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी, जया । चतुर्थी (चौथ) नवमी, चतुर्दशी, रिक्ता । पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा पूर्णा । शुक्रवार में नन्दा, बुध को भद्रा, शनि के दिन रिक्ता, मंगल को जया, बृहस्पति को पूर्णातिथि हो तो शुभ को बढ़ानेवाला सिद्धियोग होता है ॥ १ ॥

अथ समयज्ञानम् ।

...यङ्गुलं शङ्कुमादाय छाया राम...
चतुः षष्ट्यां हरेद्भागं लब्धं दण्डपलात्मक...

भा० टी०–तीन अंगुल का शङ्कु (पतली लकड़ी) लेकर उसकी छाया को नापे उसमें ती... मिलाकर चौंसठ में भाग देवै, लब्ध को दण... घड़ी जाने और बाकी जो बचै उसे साठ गु... उसी अंक का भाग देके पल जाने ॥

अथ स्त्रीनवीनवस्त्रधारणम् ।

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां चपूषणि...

वृष, तुला का पति शुक्र, कन्या, मिथुन का बुध, कर्क का स्वामी चन्द्रमा, मीन और धनु का स्वामी बृहस्पति, मकर, कुम्भ का स्वामी शनि और सिंह का पति सूर्य है ॥ १-२ ॥

अथ करणानि ।

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैव करणानि च ॥ १ ॥

भा० टी०—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये सात करण हैं ॥ १ ॥

अथ सिद्धियोगः ।

नन्दा शुक्रे बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेयः सिद्धियोगः शुभावहः ॥ १ ॥

भा० टी०—प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, नन्दा । द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी, भद्रा । तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी, जया । चतुर्थी (चौथ) नवमी, चतुर्दशी, रिक्ता । पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा पूर्णा । शुक्रवार में नन्दा, बुध को भद्रा, शनि के दिन रिक्ता, मंगल को जया, बृहस्पति को पूर्णातिथि हो तो शुभ को बढ़ानेवाला सिद्धियोग होता है ॥ १ ॥

अथ समयज्ञानम् ।

त्र्यङ्गुलं शङ्कुमादाय छाया रामसम[illegible]
चतुः षष्ट्यां हरेद्भागं लब्धं दण्डपलात्मक[illegible]

भा० टी०—तीन अंगुल का शङ्कु (पत[illegible] लकड़ी) लेकर उसकी छाया को नापे उसमें ती[illegible] मिलाकर चौंसठ में भाग देवै, लब्ध को दण[illegible] घड़ी जाने और बाकी जो बचै उसे साठ गु[illegible] उसी अंक का भाग देके पल जानै ॥

अथ स्त्रीनवीनवस्त्रधारणम् ।

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां चपूषणि[illegible]

गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बर सुखम् ॥१॥

भा० टी०—हस्त से आदि ... अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती इन ... मृत्तिकाम् । बृहस्पति. शुक्रवार के दिन ... में ... दोषभाक् ॥१ धारण करैं ॥ १ ॥

... लगावे तो

अथ पुरुषनवीनवस्त्र, मंगल को मृत्यु,

...रश्च शौने च कन्यायां मि... हानि, ... र को ... र को ... एक ... पुष्ये पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहि... को मृ... अर्थ ... भी

भा० टी०—मीन, कन्या, मिथुन, ... और रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी ... त्रों में पुरुष नवीन वस्त्र धा... उससे ... न्दा

अथ नवान्नभोजनम् ।

नवान्नभोजनं ग्राह्यं वस्त्रं प्रोक्तमशे...
वाराधिकौ सूर्यभौमौ नक्षत्रं श्रवणो मृगः

शनिराहुकुजादित्यायदाजन्मर्क्षसंस्थिताः॥ विवाहिताचयाकन्यासाकन्याविधवाभवेत्

टीका—शनि राहु भोम सूर्य इनमें कोऊ ग्रह विवाहसमयमें जन्मनक्षत्रपर होय तो कन्या विधवा होय. ॥ ९४ ॥

चतुर्दशंचनक्षत्रंजामित्रंलग्नभात्स्मृतं ॥ शुभ युक्तंतदिच्छंतिपापयुक्तंचवर्जयेत् ॥ ९५ ॥

टीका—जो लग्नके नक्षत्रतें चौदहे नक्षत्रपर कोऊ ग्रह होय तो जामित्रदोष कहिये जो सौम्यग्रह होय तो शुभहै ९५

चंद्रश्चांद्रिर्भृगुर्जीवोजामित्रेशुभकारकाः ॥ स्वर्भानुभानुमंदाराजामित्रेनशुभप्रदाः ९६

टीका—जो चंद्रमा बुध बृहस्पति ओर शुक्र ये ग्रह जन्मके नक्षत्रतें जामित्रपै होयतो शुभ कहिये और जो शनि राहु केतु होयतो तथाभौम चौदहे जामित्रपै होयतो अशुभहै ९६

[illegible]द्राद्वालग्नतोवापिग्रहावर्ज्याश्चसप्तमे ॥ तत्रस्थिताग्रहानूनंव्याधिवैधव्यका[illegible] ९७

टीका—चंद्रमातें वा लग्नके राशीतें सातें कोऊ ग्रह हो[illegible] तो [illegible]धि और वैधव्य करे ॥ ९७ ॥ [illegible]

वार्या तिथिर्मास १५।१२।१०।८।४ दशा-
ष्टवेदाः संक्रांतितोयातदिनैश्चयोज्याः ॥
ग्रहैर्विभक्तायदि पंचशेषोरोगस्तथाग्निर्नृप-
चौरमृत्युः ॥ ९८ ॥

टीका–अब पंचक कहते हैं, तिथि कहिये १५ मास कहिये १२ दश १० अष्ट ८ वेद ४ संक्रांतिके जे दिन गये होय तिनको युक्त करके नव ९ को भाग दीजे, जो पांच शेष बचे तो पंचक जानिये. ऐसेही पांचों अंक विचारके रोग पंचक १५ में अग्निपंचक बारहमें १२ राज्यपंचक दशमें १० और चोरपंचक ८ मे मृत्युपंचक ४ में ॥ ९८ ॥

यद्यर्कवारे किलरोगपंचकंसोमेचराज्यंक्षि-
तिजेचवन्हिः ॥ सौरौचमृत्युर्धिषणेचचौरो
विवाहकालेपरिवर्जनीयाः ॥ ९९ ॥

टीका [illegible] रविवारको जो रोगपंचक लगै तो सोमको राज्य- [illegible] लगे तो मंगलको अग्निपंचक शनैश्वरको मृत्युपंचक [illegible] चोरपंचक ये विवाहमें भरे होय तो वर्जितहैं ॥ ९[illegible]

र्यशुक्रसुराचार्येंवारेपक्षेतथासिते ॥ २९ ॥ ल ग्नेवृषेधनुःसिंहेकन्यामिथुनयोरपि॥ व्रतबंधः शुभेयोगेब्रह्मक्षत्रविशांपतेः ॥ ३० ॥ पापो भौमःशनिःकेतुःक्रूरोराहूरविस्तथा ॥सौम्यः सोमोबुधश्चैवगुरुःशुक्रस्तथैवच ॥ ३१ ॥

टीका—देव इति. देवोत्थान कहिये कार्तिक शुक्ल ११तें आषाढ शुक्ल११तांई अरु मीन. धनु लग्न पंचमे वर्ष तांई षष्ठी अमावास्या परिवा. नौमी. चौदश ए तिथि वर्जित हैं. अरु बुध. चंद्रवारमें विद्यारंभ करे तो मूर्ख

अथव्रतबंध मुहूर्तयंत्र.

पू.	ऽश्वि	ह.	चि.	स्वा	श्र.	ध.	श.	ज्ये.
भग	मृ.	पु.	रे.	उ.	उ.	उ.	मू	बु.
मे.	कुं.	मी.	वृ.	मी.	उ.	त्त	रा	य
२	३	१।	१०	११	१२	ति	शु	क्ल
प	क्ष	२	९	५	६	ल	ग्न	शु
ब्रा	ह्म	ण.	क्ष.	त्री.	वै	श्य	शू	द्र.

होय. शनि. भौम मृत्यु होई. ॥२५॥२६॥ विद्याइति विद्यारंभको गुरुवार श्रेष्ठहैं. शुक्र. रवि मध्यम है बुध. सोम उपविद्याको कहेहैं. शनि. मंगल सर्वथा त्याज्यहैं. ॥ २७ ॥

...ंभः ॥ यज्ञोपवीतमुहूर्त ॥ पूर्वाइति ॥ पू.षा. चित्रा. स्वा.श्र.ध.शताभि.पूर्वफा.मृ.रे.उत्तरायण

जन्म मास अरु रिक्ता ये मुंडन अरु भूषणधारणमें वर्जित हैं ॥ २३ ॥ इति चूडाकर्म॥ हस्तेति.ह.चि. स्वा. श्र. ध. पू. ३ मू. आ. पु. पु. आश्ले. मू. रे. ये न

चूडाकर्ममुहूर्तयंत्रः

पु.	पु.	ज्ये.	मृ.	श्र.	५	ह.	०
वि.	स्वा.	रे.	न	शु	क्ल	प	क्षः
११	१२	१	२	३	रा.	शि	चं.
बु.	बृ	शु.	वा	र.	२	६	११
१०	३	ल	ग्न.	२	३	५	६
७	१०	१	१३	ति	थि.	भ	द्रा
व्य.	ती	पा	त	व	र्ज्य	है	०

क्षत्र अरु रवि. बुध. गुरु. शुक्र ये वार शुभ हैं ॥ १४ ॥

देवोत्थानेमीनचापेलग्नेवर्षेचपंचमे ॥ विद्यारंभोत्रवर्ज्यश्चपठनाध्यायारिक्तका: ॥ २५ ॥ रिक्तायांचअमावस्यांप्रतिपच्चविवर्जयेत् ॥ बुधेंदुवासरेमूर्खः शनिभौमौमृतिप्रदः ॥२६ ॥ विद्यारंभेगुरुःश्रेष्ठोमध्यमौभृगुभास्करौ ॥बुधेंदूचोपविद्यायांशनिभौमौपरित्यजेत् ॥२७ पूर्वाषाढाश्विनीहस्तत्रयेचश्रवणत्रये ॥ ज्येष्ठाभगेमृगेपुष्येरेवत्यांचोत्तरायणे ॥ २८ ॥ द्वितीयायांतृतीयायांपंचम्यांदशमीयत्रे॥